पंचकल्याणक हेतु शास्त्री विद्वानों का अभूतपूर्व सहयोग

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी माह में होने जा रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु संपूर्ण मुमुक्षु समाज का उत्साह देखने को मिल रहा है। श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के भूतपूर्व स्नातक विद्वान भी इस महामहोत्सव को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद की विशेष योजना में अब तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फंड की विभिन्न मदों में 91 शास्त्री विद्वानों ने लगभग 14 लाख 3 हजार रुपये की राशि सहयोग स्वरूप प्रदान की है, जिसकी सूची 26 अक्टूबर के अंक में प्रकाशित हो चुकी है। इसके पश्चात् भी अनेक शास्त्री विद्वानों द्वारा सहयोग राशि प्राप्त होने का सिलसिला चालू है। 26 अक्टूबर से 20 दिसम्बर के बीच जो स्वीकृतियाँ आई है, उनकी सूची निम्नानुसार है -

पं. निर्मलकुमारजी जैन पूणे - 1,50,000/- रु.

पं. जिनचंदजी शास्त्री कोल्हापुर - 63000/- रु.

पं. जयेन्द्र दोशी मुम्बई - 51000/- रु.

31000 रुपये देने वाले महानुभाव - पं.सर्वज्ञ भारिल्ल जयपुर, पं.प्रकाश जैन मुम्बई, पं. नितिनजी शास्त्री मौ सूरत।

25000 रुपये देने वाले महानुभाव - पं. वी. उमापतिजी जैन शास्त्री, चैन्नई, पं. डी. अमृतसागरजी जैन शास्त्री, चैन्नई

21000 रुपये देने वाले महानुभाव - पं. हेमंत बेलोकर, डासाला
पं. महावीरजी पाटील, सांगली

11000 रुपये देने वाले महानुभाव - पं. विक्रांत शाह सोलापुर, पं. रवीन्द्र नरसाई बागलकोट, पं. सन्मतिजी मोदी सागर, पं. भरतेशजी भोसगे गुलबर्गा, पं. ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पं. मनोजजी शास्त्री करेली, पं. बाहूबलिजी भोसगे धारवाड, पं. ए. सुभाष जैन चेन्नई, पं. अशोककुमारजी वानरे, पं. शांतिनाथजी पाटील कोल्हापुर, पं.ध्रुवेशजी शास्त्री वस्त्रापुर अहमदाबाद, पं. उदयमणिजी शास्त्री नरोडा अहमदाबाद, पं. रितेशजी शास्त्री अहमदाबाद।

पं. अरविन्दकुमारजी सुजानगढ - 6200/- रु.

पं. जिनेशजी खैरागढ - 5111/- रु.

5100 रुपये देने वाले महानुभाव - पं.जीवनजी शास्त्री घुवारा, पं.अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पं.संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पं.सुधीरजी शास्त्री मंगलायतन, पं. प्रयंकजी शास्त्री रहली, पं.अखिलेशजी जैन सागर, पं.मनीषजी जैन बरेलीवाले इन्दौर, पं. सौरभ शास्त्री (शाहपुरा) मुम्बई, पं.स्वतन्त्र शास्त्री जबलपुर, पं.चिन्तामण भूष औरंगाबाद, पं. संजय राउत औरंगाबाद, पं. विजय अव्हाने देवलगांवराजा, पं.ऋषिकेश घोडके औरंगाबाद, पं. अनेकान्त शास्त्री बीजापुर, पं. संजयकुमार शाह बांसवाड़ा, पं.प्रेमचंद जैन अलवर, पं. आतिश जोगी औरंगाबाद, पं.विजय कालेगोरे, पं.शाकुल जैन मेरठ, पं.प्रदीप महाजन जिन्तूर,

(शेष पृष्ठ 29 पर ...)

(1)

(क्रमशः)

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2538) 342 अंक : 6

देखे सुखी सम्यक्वान...

देखे सुखी सम्यक्वान ।
सुख-दु:ख को दुखरूप विचारैं, धारैं अनुभव ज्ञान।
देखे सुखी सम्यक्वान ।।1 ।।
नरक सातमें के दु:ख भोगें, इन्द्र लखें तिन मान।
भीख मांग कै उदर भरैं, न करैं चक्री को ध्यान।।
देखे सुखी सम्यक्वान ।।2 ।।
तीर्थंकर पद को नहिं चावें, जदपि उदय अप्रमान।
कुष्ट आदि बहु व्याधि दहत, न चहत मकरध्वज थान।।
देखे सुखी सम्यक्वान ।।3 ।।
आदि-व्याधि निरबाध अनाकुल, चेतन जोति पुमान।
'द्यानत' मगन सदा तिहि माहिं, नाहीं खेद निदान।।
देखे सुखी सम्यक्वान ।।4 ।।

– कविवर पण्डित द्यानतरायजी

(क्रमशः)

छहढाला प्रवचन

व्यवहार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का व्याख्यान

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव बंधरु संवर जानों।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको ज्यों का त्यों सरधानों।।
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानों।
तिनको सुन सामान्य-विशेषैं दिढ़ प्रतीति उर आनों।।३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

निर्जरा तत्त्व : धर्मी का उपयोग जैसे-जैसे स्वरूप में एकाग्र होता जाता है, वैसे-वैसे शुद्धता बढ़ती जाती है और उतनी अशुद्धता तथा कर्म खिरते जाते हैं, इसका नाम निर्जरा है। जीव की शुद्धता से निर्जरा होती है, देह की क्रिया से निर्जरा नहीं होती। शरीर का कृश होना या उसमें कष्ट लगना - यह निर्जरा का कारण नहीं है; इसलिये यह धर्म भी नहीं है। चैतन्य की विशुद्धतारूप तप से सच्ची निर्जरा होती है और वही धर्म है। कर्म की स्थिति पक कर होनेवाली सविपाक निर्जरा तो सभी जीवों के होती है, उसके साथ धर्म का संबंध नहीं है और वह निर्जरा मोक्ष का कारण भी नहीं है।

मोक्ष तत्त्व : जहाँ संपूर्ण निराकुल सुख व ज्ञान है और जिसमें कर्म का, राग का या दु:ख का सर्वथा अभाव है - ऐसी मोक्षदशा है। मोक्ष क्या है और उसका उपाय क्या है ? - यह पहिचानना चाहिए। राग के सर्वथा अभावरूप मोक्ष का उपाय भी रागरहित ही है। मोक्ष के उपायरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों ही रागरहित हैं। राग मोक्ष का उपाय नहीं है। जो राग को मोक्ष का साधन मानता है, उसको मोक्षतत्त्व की पहिचान नहीं है।

मोक्ष का कारण और बन्ध का कारण भिन्न-भिन्न है, उनको भिन्नरूप जानना चाहिए। जो बन्ध का कारण हो, वह मोक्ष का कारण नहीं होता और जो मोक्ष का कारण हो, वह बन्ध का कारण नहीं होता।

सर्वज्ञ भगवान के श्रीमुख से निकले सात तत्त्व के स्वरूप को जानने से सारे विश्व के तत्त्वों का ज्ञान हो जाता है। जीव क्या है ? अजीव क्या है ? कैसे भाव से जीव को सुख होगा ? कैसे भाव से जीव को दु:ख होता है ? उनके ज्ञान बिना जीव को धर्म या सुख का उपाय नहीं हो सकता। जो आत्मा मोक्षदशारूप हुए हैं, वे देव हैं, जो आत्मा

संवर-निर्जरारूप हुए हैं, वे गुरु हैं - ऐसे सच्चे देव-गुरु की पहिचान भी नवतत्त्व के ज्ञान में आ जाती है। नवतत्त्वों के विकल्पों से पार होकर ज्ञान, अनुभूति सहित शुद्ध आत्मा की प्रतीति करना ही निश्चय सम्यग्दर्शन है। अहो, यह तो वीतराग-जैनधर्म की प्रथम भूमिका की बात है; यह धर्म का मूल है।

वीतराग जैनधर्म के सिवाय अन्य मत में तो सच्चे तत्त्व होते ही नहीं; क्योंकि उनमें सर्वज्ञता ही नहीं है। जिनमत में सर्वज्ञ भगवान ने अतीन्द्रियज्ञान से जानकर नवतत्त्व जिसप्रकार कहे हैं; उसीप्रकार अच्छी तरह पहिचानकर श्रद्धा करना, व्यवहार से सम्यग्दर्शन है, उसमें भेद और विकल्प हैं; अत: उसे व्यवहार कहा और उसी समय साथ में अपने शुद्ध आत्मा की रागरहित निर्विकल्प प्रतीति निश्चय से सम्यग्दर्शन है; यह निश्चय सम्यग्दर्शन मोक्ष का सच्चा कारण है।

देखो भाई ! अपने आत्मा के सच्चे स्वरूप की पहिचान करने के लिए सर्वज्ञकथित तत्त्वों का श्रवण करके अंतर में उसका विचार-विवेक और अनुभव करके दृढ़ निर्णय करना चाहिए; तत्त्व में कहीं भी थोड़ी-सी भी विपरीतता न रहे - इस तरह सर्वप्रकार से स्पष्ट निर्णय करना चाहिए। सर्वज्ञ वीतरागदेव अरिहन्त परमात्मा ने जो धर्म कहा और जीव का जैसा स्वरूप कहा, उसकी पहचान के बिना अन्य प्रकार से धर्म मान लेने से तो जीव को कुछ धर्म नहीं होगा; वह तो शुभ-अशुभ के चक्कर में घूमकर वहीं का वहीं (संसार में) रहेगा।

सम्यग्दर्शन के बिना राग में या देह की क्रिया में जो सामायिकादि धर्म मान लेते हैं, उनको तो जीव-अजीव की भिन्नता का भी भान नहीं है। राग से भिन्न आत्मा का भान ही जिसको नहीं है, उसको राग के अभावरूप सामायिक कैसी होगी ?

प्रश्न - शक्कर तो जब भी खावे, तब मीठी ही लगे, अँधेरे में भी वह मीठी लगे; वैसे ही सामायिक से तो धर्म ही होता है, चाहे सामायिक करनेवाला अज्ञानी ही हो ?

उत्तर - अच्छी बात है भाई, शक्कर मीठी ही लगे; परन्तु होनी तो शक्कर चाहिए न ! शक्कर के बदले में पत्थर के टुकड़े को शक्कर मानकर खायेगा तो क्या होगा ? वैसे ही सामायिक से धर्म होता है, यह बात सच्ची है; परन्तु होनी तो वह सामायिक चाहिए न ? सामायिक के बदले में यदि राग-द्वेष-अज्ञानभावों को सामायिक मान लेगा तो उसको धर्म तो कुछ नहीं होगा; परन्तु अज्ञान की ही पुष्टि होगी। सामायिक के नाम पर राग का सेवन करने से तो कुछ धर्म नहीं होता।

जिसे राग रहित समभावी-ज्ञानस्वरूपी आत्मा की पहचान हो और ऐसे आत्मा के ध्यान में एकाग्रता के उद्यम से राग-द्वेष के विषमभाव उत्पन्न ही न हों और वीतरागी समभाव रहे, उसे सच्ची सामयिक है और वही मोक्ष का कारण है। ऐसी

(क्रमश:)

सामायिक को नहीं पहिचानने वाले, राग से भिन्न आत्मा को नहीं जाननेवाले अज्ञानी को कभी सामायिक नहीं होती।

जैसे कोई फिटकरी खाता हो और माने कि मैं शक्कर खा रहा हूँ तो वह मूर्ख ही माना जायेगा, वैसे अज्ञानी शुभराग करता है और मानता है कि मैं सामायिक धर्म कर रहा हूँ - ऐसे अज्ञान के कारण जीव संसार की चार गतियों में दु:ख भोग रहा है, उनसे छुटकारा पाने की यह बात है। सम्यग्दर्शनपूर्वक वीतरागस्वरूप में स्थिरता को भगवान ने सामायिक कहा है और वही मोक्षमार्ग है। दो घड़ी की सामायिक मोक्ष देती है - ऐसी उसकी महिमा है; परन्तु सम्यग्दर्शन के बिना सामायिक या मोक्षमार्ग कभी होता ही नहीं।

प्रश्न - जीव अनन्त बार नववें ग्रैवेयेक तक गया, तब उसने नवतत्त्व की श्रद्धा तो की थी, फिर भी वह संसार में क्यों रुला ?

उत्तर - क्योंकि उसने अंतर्मुख होकर शुद्धात्मा की अनुभूति या श्रद्धा नहीं की, अकेले नवतत्त्व के भेद के विकल्प में ही वह रुक गया; अत: निश्चय के लक्ष्य से रहित अकेले व्यवहार के पक्ष से नवतत्त्व को शास्त्रानुसार माना और उसके विकल्प को ही सम्यग्दर्शन समझकर उसमें रुक गया, इसकारण वह संसार में ही रुला। यहाँ उसकी बात नहीं है; यहाँ तो मोक्षमार्ग में सम्यग्दर्शन सहित तत्त्वश्रद्धा की बात है, निश्चयसहित व्यवहार की बात है। अज्ञानी अकेली व्यवहार श्रद्धा तो करता है; परन्तु निश्चय सहित का व्यवहार उसको नहीं होता।

यद्यपि जो व्यवहार तत्त्वश्रद्धा है, वह स्वयं सम्यग्दर्शन नहीं है; परन्तु उसके साथ में शुद्ध आत्मा की निश्चय श्रद्धा, सच्चा सम्यग्दर्शन है और साथ के व्यवहार में उसका उपचार आता है। यदि वस्तु सच्ची हो, तब दूसरे में उसका उपचार हो सकता है; परन्तु सत्य के बिना उपचार किसका ? व्यवहारसम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की पर्याय नहीं है, वह तो विकल्प सहित ज्ञान की दशा है। निश्चयसम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की सम्यक्पर्याय है, वह विकल्प से रहित है। श्रद्धा में विकल्प नहीं होता, वह तो निर्विकल्प ही होती है।

मोक्षशास्त्र के पहले ही सूत्र में मोक्षमार्गरूप से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का कथन किया है - ये तीनों निश्चय हैं। जिस तत्त्वार्थश्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहा, उसके साथ भूतार्थदृष्टिरूप अपने शुद्धात्मा की श्रद्धा भी है, अत: वह निश्चयसम्यग्दर्शन है और वह मोक्षमार्ग का अवयव है। व्यवहार तत्त्व के भेदों का लक्ष्य या विकल्प मोक्षमार्ग नहीं है; परन्तु निश्चय के साथवाले व्यवहार सम्यग्दर्शन में भेदरूप तत्त्वों का जानपना होता है, उसका यहाँ वर्णन है। उनमें से जीव तत्त्व और उसके भेदों का वर्णन आगे के तीन छंदों में करेंगे। ●

(3)

नियमसार प्रवचन -

स्वभाव में जीवस्थान आदि नहीं

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 42वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।४२।।

इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।
एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं।।42।।

जीव को चार गति के भवों में परिभ्रमण, जन्म, जरा, मरण, रोग, शोक, कुल, योनि, जीवस्थान और मार्गणास्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे ...)

भगवान ने छह द्रव्य और नव पदार्थ देखे हैं और वैसा ही वस्तु का स्वरूप है। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल - ये छह पदार्थ ध्रुव रहते हैं; लेकिन इनकी अवस्था बदलती रहती है। जीव की संसारदशा व पर्यायों के भी अनेक भेद पडते हैं - वे सभी यहाँ कहे गए हैं। ये सभी भेद व्यवहार दृष्टि से बराबर हैं। कोई जीव इन सबको एक ही वस्तु माने और छह द्रव्य न माने तो झूठ है। वस्तु को एकान्त, कूटस्थ माने तथा पर्याय को न माने तो भी खोटा है। पर्याय में अशुद्धता के भेद पड़ते हैं - इस तरह पर्याय का स्वीकार करे और त्रिकालस्वभाव में ऐसे भेद नहीं होते यह निश्चय से स्वीकार करे तो व्यवहारप्रमाणज्ञान होता है। किन्तु त्रिकाली में ऐसे भेद नहीं हैं - ऐसा निर्णय करके, स्वभाव की निर्विकल्प श्रद्धा-ज्ञान करके स्व-परप्रकाशक स्वभाव प्रगट होने पर पर्याय में ऐसे भेद हैं - ऐसा यथार्थ जानने पर यथार्थ ज्ञान कहलायेगा।

(१) अकेले भेदों को माने और अभेद त्रिकालीस्वभाव की तरफ न ढले तो उसका ज्ञान खोटा है।

(२) अभेद स्वभाव को शुद्ध मानकर पर्याय की अशुद्धता अथवा पर्याय को ही न स्वीकारे तो भी ज्ञान खोटा है।

पर्याय का ज्ञान करके यह कहना चाहते हैं कि त्रिकालस्वभाव में ऐसे भेद नहीं हैं। पर्याय में से पर्याय नहीं आती; किन्तु त्रिकालशक्ति में से पर्याय प्रगट होती है;

(क्रमश:)

इसलिये अंशबुद्धि, व्यवहारबुद्धि छुड़ाने के लिये और अभेदबुद्धि, स्वभावबुद्धि कराने के लिये जीव में मार्गणास्थानादि के भेद नहीं हैं - ऐसा कहा। ऐसा अभेद शुद्धभाववाला आत्मा सम्यग्दर्शन का कारण है।

शुभाशुभभावों के ऊपर की पर्यायबुद्धि छोड़कर शुद्धस्वभाव की बुद्धि करके शुद्धस्वभाव का स्वयं से अनुभव करो।

इसीप्रकार आचार्यदेव श्रीमद् अमृतचन्द्रसूरि ने (श्री समयसार की आत्मख्याति नामक टीका में ३५-३६वें श्लोकों द्वारा) कहा है कि -

(मालिनी)

सकलमपि विहायाह्नाय चिच्छक्तिरिक्तं
स्फुटतरमवगाह्य स्वं च चिच्छक्तिमात्रम्।
इममुपरि चरंतं चारु विश्वस्य साक्षात्
कलयतु परमात्मात्मानमात्मन्यनंतम् ।।१८।।

(हरिगीत)

चैतन्यशक्ति से रहित परभाव सब परिहार कर।
चैतन्यशक्ति से सहित निजभाव नित अवगाह कर।।
है श्रेष्ठतम जो विश्व में सुन्दर सहज शुद्धातमा।
अब उसी का अनुभव करो तुम स्वयं हे भव्यातमा।।

चित्शक्ति से रहित अन्य सकल भावों को मूल से छोड़कर और चित्शक्तिमात्र ऐसे निज आत्मा का अति स्फुटरूप से अवगाहन करके, आत्मा समस्त विश्व के ऊपर प्रवर्तमान ऐसे इस केवल (एक) अविनाशी आत्मा को आत्मा में साक्षात् अनुभव करो।

ज्ञानभाव के अतिरिक्त अन्य सभी शुभाशुभ भावों को मूल से छोड़ो; दान-दया-व्रत-भक्ति आदि शुभभावों से दृष्टि (पर्यायदृष्टि) छोड़ो और आत्मा अकेला ज्ञायकस्वभाव है - ऐसी श्रद्धा-ज्ञान करके उसमें अवगाहन करो। जैसे समुद्र में मोती लेने के लिये डुबकी लगाते हैं वैसे ही निश्चयनय से शुद्धस्वभाव का अवलम्बन करके उसमें एकाग्रता करो और समस्त विश्व के ऊपर तैरता केवल अखण्ड अविनाशी आत्मा को आत्मा में साक्षात् अनुभवो।

दया-दान-भक्ति एकसमय के परिणाम हैं, उनसे धर्म होनेवाला नहीं- उन सभी भावों से भिन्न आत्मा है। विकार तो कभी शुद्धात्मा में प्रविष्ट हुआ ही नहीं। जल में स्नान करने के समान शुद्धात्मा में डुबकी लगाओ अर्थात् उसकी श्रद्धा-ज्ञान करके एकाग्र हो जाओ - यही मोक्ष का कारण और मोक्षमार्ग है। इसप्रकार शुद्धस्वभाव में एकाग्र होने पर अन्य सकल भाव छूट जाते हैं। शुद्ध आत्मा का अनुभव किसी परपदार्थ से तो नहीं; किन्तु विकार से भी नहीं होता - शुद्ध अनुभव तो स्वयं से होता

है। शुद्ध आत्मा को आत्मा से अनुभवो - ऐसा आचार्य भगवान कहते हैं।

ज्ञानशक्ति से भरपूर आत्मा एक ही सार है, विकारभाव पौद्गलिक हैं, साररूप नहीं।

(अनुष्टुभ्)

चिच्छक्तिव्याप्तसर्वस्वसारो जीव इयानयम्।
अतोऽतिरिक्ता: सर्वेऽपि भावा: पौद्गलिका अमी।।१९।।

(दोहा)

चित् शक्ति सर्वस्व जिन, केवल वे हैं जीव।
उन्हें छोड़कर और सब, पुद्गलमयी अजीव।।

चैतन्यशक्ति से व्याप्त जिसका सर्वस्व-सार है - ऐसा यह जीव इतना ही मात्र है; इस चित्शक्ति से शून्य यह भाव पौद्गलिक है।

मैं अखण्ड ज्ञायकस्वभावी हूँ, चैतन्यशक्ति से प्रसरित हूँ, दया-दानादि के तथा व्रतादि के परिणाम में आत्मा का प्रसार नहीं है, वे भाव अन्तर आत्मा में कभी प्रविष्ट ही नहीं हुये। जो पुण्य-पाप में व्याप्त है, वह अनात्मा है; आत्मा है ही नहीं। त्रिकालीकारणपरमात्मा भगवान है, उसमें से भगवान प्रगट होता है; बाहर से नहीं।

जानने-देखनेवाला स्वभाव ही एक साररूप है और यह जीव इतना ही मात्र है तथा जो जानने-देखने के स्वभाव से शून्य विकारीभाव हैं, वे साररूप नहीं हैं; वे सभी पौद्गलिक हैं।

पुण्य-पाप के भावों को यहाँ पौद्गलिक कहा अर्थात् वे स्पर्श, रस, गंध, वर्ण वाले हैं - ऐसा कहने का भाव नहीं है। वे विकारी पर्यायें जीव में ही होती है, कहीं जड़ में नहीं होतीं; तत्त्वार्थसूत्र में पर्याय अपेक्षा से विकार को स्वतत्त्व कहा है। विकार पुद्गल के लक्ष्य से होता है और शुद्ध स्वभाव में वह नहीं है तथा आत्मा में से निकल जाता है - इसलिये उसे पौद्गलिक कहा है। अतः चैतन्यशक्ति जिसका सार है - ऐसे शुद्धात्मा को तू भज ! यही इस कथन का सार है।

४२वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज दो श्लोक कहते हैं -

(मालिनी)

अनवरतमखण्डज्ञानसद्भावनात्मा
व्रजति न च विकल्पं संसृतेर्घोररूपम्।
अतुलमनघमात्मा निर्विकल्प: समाधि:
परपरिणतिदूरं याति चिन्मात्रमेष:।।६०।।

(रोला)

रहे निरन्तर ज्ञानभावना निज आतम की।
जिनके वे नर भव विकल्प में नहीं उलझते।।

(क्रमश:)

परपरिणति से दूर समाधि निर्विकल्प पा।
पा जाते हैं अनघ अनूपम निज आतम को॥६०॥

सततरूप से अखण्ड ज्ञान की सद्भावनावाला आत्मा (अर्थात् 'मैं अखण्ड ज्ञान हूँ' ऐसी सच्ची भावना जिसे निरन्तर वर्तती है, वह आत्मा) संसार के घोर विकल्प को नहीं पाता, किन्तु निर्विकल्प समाधि को प्राप्त करता हुआ परपरिणति से दूर, अनुपम, अनघ[१] चिन्मात्र को (चैतन्यमात्र आत्मा को) प्राप्त होता है।

मैं आत्मा ज्ञानस्वभावी हूँ, पुण्य-पाप मेरा स्वरूप नहीं, आत्मा शुद्ध है - ऐसी जो भावना भाता है, वह संसार के घोर विकल्पों को प्राप्त नहीं होता अर्थात् उसको व्यवहार रत्नत्रय के विकल्प की भी रुचि नहीं रहती। आत्मा की भावना तो स्वयं पर्याय है, परन्तु उस पर्याय का ध्येय त्रिकाली शुद्धस्वभाव है।

इसप्रकार जो जीव पुण्य-पापादि व्यवहार की रुचि छोड़कर शुद्धस्वभाव की रुचि करता है वह निर्विकल्प समाधि को प्राप्त करता है। वही जीव पुण्य-पाप की परिणति से दूर, जिसको कोई उपमा न दी जा सके ऐसा और पुण्य-पाप के दोषरहित शुद्धचैतन्यमात्र को प्राप्त करता है। इस भाँति जो जीव त्रिकाली अखण्ड ज्ञायकस्वभाव की भावना भाता है, वह जीव शान्ति को अर्थात् मोक्षदशा को पाता है।

(स्रग्धरा)

इत्थं बुद्ध्वोपदेशं जननमृतिहरं यं जरानाशहेतुं
भक्तिप्रह्वामरेन्द्रप्रकटमुकुटसद्रत्नमालार्चितांघ्रेः।
वीरात्तीर्थाधिनाथाद्दुरितमलकुलध्वांतविध्वंसदक्षं
एते संतो भवाब्धेरपरतटममी यांति सच्छीलपोताः॥६१॥

(रोला)

भक्तामर की मुकुट रत्नमाला से वंदित।
चरणकमल जिनके वे महावीर तीर्थंकर॥
का पावन उपदेश प्राप्त कर शीलपोत से।
संत भवोदधि तीर प्राप्त कर लेते सत्वर॥६१॥

भक्ति से नमित देवेन्द्र मुकुट की सुन्दर रत्नमाला द्वारा जिनके चरणों को प्रगटरूप से पूजते हैं ऐसे महावीर तीर्थाधिनाथ द्वारा यह सन्त जन्म-जरा-मृत्यु का नाशक तथा दुष्ट पापसमूहरूपी अंधकार का ध्वंस करने में चतुर ऐसा इसप्रकार का (पूर्वोक्त) उपदेश समझकर, सत्शीलरूपी नौका द्वारा भवाब्धि के सामने किनारे पहुँच जाते हैं।

देवों द्वारा पूज्य भगवान का उपदेश धारण करके सन्तगण सत्शीलरूपी नौका से संसार का पार पा जाते हैं।

सन्त पुरुष भगवानकथित उपदेश समझ कर संसार का पार पाते हैं।

१. अनघ = दोष रहित; निष्पाप; मल रहित

(शेष पृष्ठ 32 पर ...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : दृष्टि के विषय में वर्तमान पर्याय शामिल है या नहीं ?

उत्तर : दृष्टि के विषय में मात्र ध्रुवद्रव्य ही आता है। पर्याय तो द्रव्य को विषय करती है; परन्तु वह ध्रुव में शामिल नहीं होती, क्योंकि वह विषय करने वाली है। विषय और विषयी भिन्न-भिन्न हैं।

प्रश्न : द्रव्यदृष्टि में किसका आलम्बन होता है ?

उत्तर : द्रव्यदृष्टि शुद्ध अन्त:तत्त्व का ही अवलम्बन लेती है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की निर्मल पर्याय भी बहिर्तत्त्व है, उसका आलम्बन द्रव्यदृष्टि में नहीं है। संवर-निर्जरा-मोक्ष भी पर्याय है, अत: वह भी विनाशीक होने से बहिर्तत्त्व है, उसका भी आलम्बन द्रव्यदृष्टि में नहीं है। मन-शरीर-वाणी, कुटुम्ब अथवा देव-शास्त्र-गुरु ह्न ये तो परद्रव्य होने से बहिर्तत्त्व हैं ही और दया-दान-व्रत-तपादि के परिणाम भी विकार होने से बहिर्तत्त्व ही हैं; परन्तु यहाँ तो जो शुद्ध निर्मल पर्यायरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के परिणाम हैं, वे भी क्षणिक अनित्य और एकसमयमात्र टिकते होने से, ध्रुवतत्त्व अन्त:तत्त्व की अपेक्षा से बहिर्तत्त्व ही हैं। अत: उनका भी आलम्बन लेने योग्य नहीं है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन का विषय क्या है ?

उत्तर : समयसार की 13वीं गाथा में कहा है कि नवतत्त्वरूप पर्यायों में अन्वयरूप से विद्यमान भूतार्थ एकरूप सामान्य ध्रुव वह सम्यग्दर्शन का विषय है। पंचाध्यायी (अध्याय 2) में भी कहा है कि भेदरूप नवतत्त्वों में सामान्यरूप से विद्यमान अर्थात् ध्रुवरूप से विद्यमान वह जीव का शुद्ध भूतार्थ स्वरूप है। इसप्रकार भेदरूप नवतत्त्वों से भिन्न शुद्ध जीव को बतलाकर उसे सम्यग्दर्शन का विषय अर्थात् ध्येयरूप बतलाया है।

जीव की श्रद्धापर्याय ध्येयभूत सामान्य ध्रुव द्रव्यस्वभाव की ओर झुकती है तभी सम्यग्दर्शन एवं निर्विकल्प स्वानुभव होता है। उस समय दर्शन-ज्ञान-चारित्रादि सर्व

(क्रमश:)

गुणों के परिणाम (पर्याय) स्वभाव की ओर झुकते हैं; मात्र श्रद्धा-ज्ञान के ही परिणाम झुकते हैं ऐसा नहीं है।

प्रश्न : ध्रुव स्वभाव के साथ निर्मल पर्याय को अभेद करके दृष्टि का विषय मानने में क्या आपत्ति है ?

उत्तर : ध्रुव द्रव्यस्वभाव के साथ निर्मल पर्याय को एकमेक करने से दृष्टि का विषय होता है - ऐसा मानने वाले व्यवहार से निश्चय होना मानने वालों की भाँति ही मिथ्यादृष्टि है; उनका जोर पर्याय पर है, ध्रुव स्वभाव पर नहीं है।

सम्यग्दर्शन के विषय में द्रव्य के साथ उत्पादरूप निर्मल पर्याय को साथ लेने से वह निश्चय नय का विषय रहकर प्रमाण का विषय हो जाता है और प्रमाण स्वयं सदभूत व्यवहार नय का विषय है। निश्चय नय का विषय अभेद एकरूप द्रव्य है, प्रमाण की भाँति उभयअंशग्राही नहीं है। यदि पर्याय को द्रव्य के साथ एकमेक किया जाये तो निश्चय नय का विषय जो त्रिकाली सामान्य है, वह नहीं रहता; परन्तु प्रमाण का विषय हो जाने से दृष्टि में भूल है, विपरीतता है।

अनित्य नित्य को जानता है; पर्याय द्रव्य को जानती है; पर्यायरूप व्यवहार निश्चयरूप ध्रुवद्रव्य को जानता है; भेद अभेद द्रव्य को जानता है; पर्याय जानने वाली अर्थात् विषयी है और त्रिकाली ध्रुव द्रव्य जानने वाली पर्याय का विषय है। यदि द्रव्य के साथ निर्मल पर्याय को मिलाकर निश्चय नय का विषय कहा जाये तो विषय करने वाली पर्याय तो कोई भिन्न नहीं रही। अत: पर्याय को विषयकर्त्ता के रूप में द्रव्य से भिन्न लिया जाये तभी विषय-विषयी दो भाव सिद्ध हो सकते हैं; इससे अन्यथा मानने से महाविपरीतता होती है।

श्रुतज्ञान की पर्याय वह प्रमाणज्ञान है। प्रमाणज्ञान स्वयं पर्याय होने से व्यवहार है। वीतरागी पर्याय स्वयं व्यवहार है; परन्तु उसने त्रिकाली द्रव्यरूप निश्चय का आश्रय लिया होने से उस निर्मल पर्याय को निश्चय नय कहा है; परन्तु वह पर्याय होने से व्यवहार ही है।

शास्त्र का तात्पर्य वीतरागता है। पर का लक्ष्य छोड़कर, राग का लक्ष्य छोड़कर, पर्याय का लक्ष्य छोड़कर, त्रिकाली द्रव्य का लक्ष्य करे, तब वीतरागता प्रकट होती है। यदि त्रिकाली द्रव्यरूप ध्येय में पर्याय को साथ ले तो वह बात नहीं रहती।

समाचार दर्शन -

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

दाहोद (गुज.) : यहाँ दिनांक 5 से 11 दिसम्बर श्री दिगम्बर जैन नवा मंदिर तेरापंथी पंच ट्रस्ट दाहोद द्वारा प्रथम बार आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन समयसार के निर्जरा अधिकार पर प्रवचनों का लाभ मिला। आहारदान पर हुआ आपका प्रवचन भी सराहनीय रहा। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित मीठाभाई दोशी, पण्डित रजनीभाई, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित शैलेषभाई तलोद इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के तीसरे दिन तीर्थङ्कर के गर्भ कल्याणक के अवसर पर देवों द्वारा पुष्पवृष्टि का दृश्य और तीर्थङ्कर की माता को दिखलाये जाने वाले सोलह स्वप्न का प्रदर्शन सभी उपस्थित दर्शकों द्वारा सराहा गया।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री विपिनचंद-प्रेमिला गांधी को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री राकेशभाई- चेताली गांधी थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री चन्द्रेशभाई-सीमा भूता थे। महोत्सव की संपूर्ण विधि के यज्ञनायक श्री शैलेषभाई-शर्मिला मेहता सन्तरामपुर थे।

इस अवसर पर भगवान महावीर की प्रतिमा के विराजमानकर्त्ता श्री नेहल प्रणय कोठारी सीमंधर ज्वैलर्स परिवार, भगवान आदिनाथ की प्रतिमा के विराजमानकर्त्ता श्री प्रकाशचंद मीठालालजी बोगड़ा परिवार मुम्बई एवं सीमंधर भगवान की प्रतिमा के विराजमानकर्त्ता गांधी मशीनरी परिवार थे।

महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री विमलकुमारजी जैन नीरु केमिकल्स दिल्ली थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन मीठालाल लूणजी सरैया परिवार ने किया।

इस अवसर पर दिनांक ८ दिसम्बर की रात्रि को दाहोद मण्डल की ओर से बारह भावनाओं पर आधारित वैराग्यप्रद नाटिका 'संसार से मोक्ष की ओर' का मंचन किया गया, जिसकी सभी लोगों ने बहुत प्रशंसा की।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कमेटी के अध्यक्ष श्री अजितभाई जैन बड़ौदा, कार्याध्यक्ष पण्डित अमृतभाई मेहता फतेपुर, महामंत्री श्री रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, उपाध्यक्ष श्री दीपकभाई सर्राफ, श्री दीपकभाई कोठारी, श्री चन्द्रेशभाई भूता व श्री शीतल सर्राफ थे।

(7)

(क्रमशः)

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर प्रतिष्ठा कमेटी ने समस्त विद्वानों एवं अतिथियों का सम्मान एवं आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों एवं पण्डित विरागजी शास्त्री की (बाल कार्यक्रमों की) लगभग 1 लाख रुपये सी.डी. तथा लगभग 1 लाख रुपये के सत्साहित्य का विक्रय हुआ।

महोत्सव में जयपुर पंचकल्याणक का हार्दिक आमंत्रण भी दिया गया। सभी लोगों ने पंचकल्याणक में आने की भावना व्यक्त की।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही । जन्म कल्याणक के अवसर पर बहुत धूमधाम से जुलूस निकाला गया। इन्द्रसभा व राजसभा का संचालन पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली ने बहुत सुन्दर ढंग से किया।

– राकेश शास्त्री, वीरेन्द्र शास्त्री दाहोद

जयपुर पंचकल्याणक में आने हेतु –

समाज में अपूर्व उत्साह

श्री टोडरमल स्मारक भवन में 21 से 27 फरवरी 2012 तक होने वाले आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आने हेतु देश-विदेश में रहने वाले मुमुक्षु भाईयों में अपूर्व उत्साह का वातावरण बना हुआ है।

अभी तक लगभग 4500 लोगों के फार्म प्राप्त हो चुके हैं और प्रतिदिन अनेक फार्म आ रहे हैं। अनेक स्थानों से 40-50 के समूहों में अपनी बस करके जयपुर आ रहे हैं, ताकि उन्हें आने-जाने की सुविधा रहे, साथ ही साथ आस-पास के तीर्थ-स्थानों की यात्रा का लाभ भी मिलेगा।

यदि आप भी बस लेकर समूह में पधारें तो आपको प्रतिष्ठा मण्डप में आने-जाने की सुविधा तो रहेगी ही, आस-पास के तीर्थों की यात्रा भी आसानी से कर सकेंगे।

(पृष्ठ 4 का शेष ...)

पं.हितेन्द्रकुमार जैन हटा, पं.आलोकजी कारंजा, पं.आदेशजी बोरालकर, पं.बसन्तकुमार जैन चेन्नई, पं. गजेन्द्रकुमार जैन भरतपुर, पं.कीर्तिजयजी गोरे परभणी, पं.मुकेशजी जैन सिंगोली, पं.किशोरजी धोंगड़े, पं.मुकुन्दजी ढोके वसमतनगर, पं.महेन्द्रजी मिरकुटे आसेगांव, पं. निमेशकुमारजी घाटोल, पं.नितिनजी कोठेकर, पं.जे.अशोक जैन चेन्नई, ब्र.कैलाशचंदजी 'अचल', पं.प्रशांतजी काले, पं.प्रशांतकुमार बोरालकर सेनगांव, पं.प्रशांतजी जैन मौ, पं.प्रसन्न शेटे कोल्हापुर, पं.राजेशजी सिंगोली, पं.संदीपजी दिल्ली, पं. संतोष सावजी परभणी, पं.सचिनजी गढी चैतन्यधाम, पं.वीरेन्द्रजी शाह दाहोद, पं.विनीतजी जैन बुलन्दशहर, पं.सुरेशचंदजी घोड़ाडोंगरी, पं.जयेशजी रोकड़े, पं.रत्नेशजी मेहता वस्त्रापुर अहमदाबाद, पं.सुनीलजी शास्त्री राजकोट।

इसप्रकार 73 स्नातकों द्वारा 8 लाख 48 हजार एक सौ ग्यारह रुपये की राशि प्राप्त हुई।

---

(7)

)

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक हेतु –

महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन संपन्न

महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में दिनांक 17 नवम्बर से 29 नवम्बर तक पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन संपन्न हुआ। यह रथ औरंगाबाद से प्रारम्भ होकर अंबड़, देवलगाँवराजा, चिखली, डसाला, डोणगांव, मालेगांव, कारंजा, वाशिम, रिसोड, हिंगोली, सेलू, वसमतनगर, सोलापुर, आणंद, गुलबर्गा, इण्डी, बीजापुर, बेलगांव, तीरदाल, कोल्हापुर, सांगली, चन्द्रपुर, नातेपुते होते हुए अकलूज पहुँचा।

प्रत्येक स्थान पर नृत्यगान, बैण्डबाजे के साथ रथ का धूमधाम से स्वागत हुआ व जुलुस, शोभायात्रा व नगर भ्रमण कराया गया। सभी स्थानों पर पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बेलगांव एवं पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा भी रथ में सम्मिलित थे। महाराष्ट्र के अनेक स्थानों पर पण्डित संतोषजी शास्त्री सावजी ने भी रथ का बहुत उत्साह से साथ दिया।

प्रत्येक जगह पर पंचकल्याणक का बड़े उत्साह व भक्तिभावपूर्वक सभी लोगों को पंचकल्याणक में आने का आमंत्रण दिया गया। सभी स्थानों पर महाविद्यालय के जो-जो स्नातक छात्र हैं, उनका उत्साह और सहयोग देखते ही बनता था। प्रत्येक स्थान पर समाज ने रथ का भरपूर स्वागत किया तथा पंचकल्याणक महोत्सव में जयपुर आने हेतु कलशों एवं आवास आदि की बुकिंग भी करायी।

अनेक स्थानों से तो 50-50, 60-60 लोगों ने एक साथ जयपुर आने हेतु आवास की बुकिंग कराई एवं रेल के टिकिट बुक करा लिये हैं।

डॉ. भारिल्ल पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

दिल्ली : श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद के अध्यक्ष पद पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल निर्विरोध निर्वाचित हुये। साधारण सभा की बैठक नवीन कार्यकारिणी के चयन एवं अन्य आवश्यक कार्यों के लिये दिनांक 15 जनवरी 2012 को संभावित है, जिसकी सूचना सभी सदस्यों को यथासमय दे दी जायेगी।

स्मरणीय है कि डॉ. भारिल्लजी के विगत कार्यकाल में समयसार वाचना के अतिरिक्त अनेक स्थानों पर समयसार की गोष्ठियाँ, छहढाला शिविर तथा 16 पुस्तकों के माध्यम से विपुल मात्रा में साहित्य का प्रकाशन किया गया।

– डॉ. सत्यप्रकाश जैन (महामंत्री)

(क्रमशः)

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनाँक 13 नवम्बर को **'व्रत : एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इसमें जीवेश जैन पिड़ावा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) व नितिन जैन झालरापाटन (उपाध्याय वरिष्ठ) श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चयनित हुये।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर ने, आभार प्रदर्शन अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने, संचालन अभिषेक सिलवानी एवं विपुल बोरालकर (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तथा मंगलाचरण स्वप्निल वायकोस (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

●दिनांक 20 नवम्बर को **मोक्षमार्ग विवेचन : एक संगोष्ठी** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें उपाध्याय वर्ग में कु. निधि जैन खनियांधाना एवं शास्त्री वर्ग में स्वतंत्रभूषण जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चयनित हुये।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ ने, आभार प्रदर्शन अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने, संचालन आकाश जैन एवं अशोक जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तथा मंगलाचरण आकाश जैन सुनवाहा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

●दिनाँक 27 नवम्बर को **'छहढाला : एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें कु.अनु जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) व मयंक जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चयनित हुये।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित निर्मलकुमारजी बोहरा ने, आभार प्रदर्शन अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने, संचालन पंकज बकस्वाहा एवं नकुल मुरैना (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तथा मंगलाचरण आयुष जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

●दिनांक 4 दिसम्बर को **गुणस्थान से गुणस्थानातीत** विषय पर गोष्ठी का आयेजन किया गया। इसमें उपाध्याय वर्ग में सचिन जैन भिण्ड (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं शास्त्री वर्ग में गोम्मटेश्वर चौगुले हेरले (शास्त्री द्वितीय वर्ष) श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चयनित हुये।

श्रेष्ठ वक्ताओं को 100-100 रुपये की राशि प्रदान की गई।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. नीतेशजी शाह ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने, संचालन रवीन्द्र जैन बकस्वाहा एवं राशुल जैन कोतमा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तथा मंगलाचरण अभिषेक जैन हीरापुर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

आवास आरक्षण फार्म भरकर जल्दी भेजें

21 से 27 फरवरी तक टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर आवास के आरक्षण हेतु फार्म भरकर शीघ्र भेजें।

(8)

आगामी कार्यक्रम...

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग का छठवाँ सेमिनार हैदराबाद में

कुछ लोग आध्यात्मिक सिद्धांतों को समझते ही नहीं और कुछ बुद्धि से समझ तो लेते हैं; परन्तु जीवन का अंग नहीं बनाते; इसलिये जीवन की हर समस्या का समाधान नहीं ढूंढ पाते। आध्यात्मिक सिद्धांतों को पढ़ना अलग बात है और उनको जीवन में उतारना अलग बात है। आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का उद्देश्य यह भावभासन कराना है कि अध्यात्म वर्तमान में भी हमारे जीवन को शांत और सुखमय बनाने में अत्यंत सक्षम है। यह सेमिनार पूर्व में मुम्बई, दिल्ली एवं लोनावाला में भी आयोजित किया जा चुका है। अब यह हैदराबाद में आयोजित होने जा रहा है।

आगामी दिनाँक 8 जनवरी 2012 को हैदराबाद में **JIWO (Jain International Women's organization), JITO (Jain International trade organization)** एवं अन्य संगठनों के तत्त्वावधान में छठवें आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार का आयोजन किया जाएगा।

वर्कशॉप का स्थान – VSP's The Grand Solitaire, 3-6-198 Vasavi Shreemukh, Himayathnagar, Hyderabad.

यह सेमिनार दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट द्वारा डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में होगा, जिसमें 13 वर्ष से अधिक आयु वाले सभी लोग सम्मिलित हो सकते हैं। इस वर्कशॉप में आने के लिए रजिस्ट्रेशन हेतु संपर्क करें -

(हैदराबाद में)-**Mr. D.C.Galada - 09392525060**

(मुम्बई में)-**Mr. Avinash Kumar Taraiya - 09321295265**

(पृष्ठ 25 का शेष ...)

अब प्रथम ही उपदेशदाता भगवान कैसे होते हैं सो कहते हैं। देवों के इन्द्र भी भगवान को नमते हैं। वे अपने मुकुटों की सुन्दर रत्नमाला से भगवान के चरणों को पूजते हैं। ऐसे तीर्थंकर का उपदेश कैसा है? जन्म-जरा-मृत्यु को नाश करने में और मिथ्यात्वरूपी पाप का क्षय करने में वह उपदेश प्रभावकारक है। उस उपदेश में ऐसा आया कि पर्याय में होनेवाला विकार मात्र एकसमय की स्थितिवाला है, शुद्धस्वभाव में विकार है नहीं। ऐसा भगवान का उपदेश अपने में यथार्थ धारण करके सन्तजन शुद्धस्वभाव के आश्रय से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रगट करते हैं और उस नौका द्वारा भवरूपी समुद्र को उल्लंघ कर मोक्षदशा को पाते हैं। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

(क्रमशः)

कमल शुद्धि संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर दीवान भदीचन्दजी में दिनांक 4 दिसम्बर,2011 को जिनमंदिर की नौ प्राचानी वेदियों पर स्वर्णमंडित 27 पाषाण कमलों की स्थापना करके जिनप्रतिमायें विराजमान की गई। इसके लिये जलयात्रा पूर्वक कमल शुद्धि एवं यागमंडल विधान आदि समस्त कार्यक्रम पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में संपन्न हुये। **ह्न डॉ. सुरेन्द्र दीवान**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(मंगलवार, 21 फरवरी से सोमवार, 27 फरवरी 2012)

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित श्री सीमंधर जिनालय एवं त्रिमूर्ति जिनालय के नवीनीकरण के अवसर पर होने वाले ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न होगा। महा महोत्सव के **प्रधान प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचन्दजी बांझल इन्दौर** हैं। इस अवसर पर लगभग 750 विद्वानों का अपूर्व समागम प्राप्त होगा।

सप्त दिवसीय आयोजनों के ऐतिहासिक क्षणों के प्रत्यक्षदर्शी बनने हेतु जयपुर ठहरने का **आवास आरक्षण फार्म यदि आपने अभी तक भी भरकर नहीं भेजा है, तो शीघ्र भेजें।** आरक्षण फार्म जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

शोक समाचार

1. मुम्बई निवासी श्री रमेशजी मंगल का दिनांक 3 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

जयपुर में लगने वाले शिविरों में धर्मलाभ लिया करते थे। टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों एवं विद्वानों के प्रति आपका विशेष अनुराग एवं वात्सल्य था। ज्ञातव्य है कि टोडरमल स्मारक के मुख्य द्वार का निर्माण आपकी ओर से ही किया गया है। जयपुर पंचकल्याणक में भी आपने 11 लाख रुपये की राशि प्रदान की है।

2. खिमलासा (म.प्र.) निवासी श्री शांतिलालजी का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत धर्मप्रेमी बन्धुवर थे; आप अनेकों बार जयपुर में रहकर ही धर्मलाभ लिया करते थे। जयपुर में अनेक शिविरों का आयोजन आपकी ओर से हुआ है। टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों एवं विद्वानों के प्रति आपका विशेष अनुराग एवं वात्सल्य था।

3. हिंगोली (महा.) निवासी पण्डित जयकुमारजी दोडल की धर्मपत्नी श्रीमती केसरबाई दोडल का दिनांक 26 सितम्बर को 84 वर्ष की आयु में तत्त्वार्थसूत्र का पाठ करते हुए अत्यंत शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था को 101/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों-यही मंगल भावना है।

दानदातारों से निवेदन

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के बैंक अकाउंट में इन्टरनेट बैंकिंग द्वारा दानराशि भेजने वाले सभी दातारों से निवेदन है कि वे जो भी दानराशि बैंक में डायरेक्ट जमा कराते हैं, उसकी जानकारी जयपुर कार्यालय को पत्र/ई-मेल/फैक्स/एस.एम.एस. द्वारा अवश्य भेजें, ताकि उसका जमाखर्च कर उसकी रसीद भेजी जा सके।

संपर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15; 0141-2707458, 2705581, फैक्स नं.-2704127

E-mail- info@ptst.in, ptstjaipur@yahoo.com

09314404177 (अकाउन्टेन्ट, जवाहरलालजी जैन)

09785643202 (मैनेजर, पीयूषजी जैन)

आवश्यक सूचना

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, म.प्र. प्रान्त की सभी शाखाओं की जानकारी एक जानकारी फार्म भेजकर मंगायी जा रही है। जिन शाखाओं को अभी तक फार्म प्राप्त नहीं हुये हों कृपया संपर्क करें एवं शीघ्र भरकर भिजवाने की कृपा करें। जो भाई अपने यहाँ फैडरेशन की नवीन शाखा का गठन करना चाहते हैं, वे भी शीघ्र संपर्क करें - पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री, (म.प्र. प्रान्त संयोजक) ग्वालियर। मो. 09893224022

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 से 25 जनवरी 2012	राघौगढ (म.प्र.)	पंचकल्याणक
30 जन.से 5 फर. 2012	अजमेर (राज.)	पंचकल्याणक
21 से 27 फरवरी 2012	जयपुर (राज.)	पंचकल्याणक

(पृष्ठ 35 का शेष ...)

ज्ञातव्य है कि सोनगढ आदि सभी स्थानों पर गुरुदेवश्री के प्रवचनों के पश्चात् डॉ. भारिल्ल द्वारा उनके प्रवचनों का सारांश अत्यंत मार्मिक शब्दों में बताया गया, जिसकी सभी ने बहुत प्रशंसा की।

अहमदाबाद में आमंत्रण देने हेतु श्री अजितभाई मेहता नवरंगपुरा, श्री सेवंतीभाई गांधी, श्री रमेशभाई शाह, श्री अमृतभाई मेहता, पण्डित रजनीभाई दोशी, श्री अनिलभाई गांधी तलोद, श्री सतीशभाई मेहता और महाविद्यालय के स्नातक पण्डित ऋषभजी शास्त्री एवं पण्डित ध्रुवेशजी शाह शास्त्री अहमदाबाद का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

सभी स्थानों पर लोगों ने जयपुर पंचकल्याणक आने की भावना व्यक्त की एवं अपने आवास फार्म भी भरकर दिये।

(क्रमशः)

(10)

)